Toppersnotes

Unleash the topper in you

UGC-NET

हिन्दी साहित्य

National Testing Agency (NTA)

पेपर 2 || भाग – 3

साहित्यशास्त्र, वैचारिक पृष्ठभूमि, हिन्दी कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध एवं आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET पेपर – 2 (हिन्दी साहित्य)

इकाई - III : साहित्यशास्त्र		
1.	काव्य-हेतु	1
2.	काव्य के लक्षण	5
3.	काव्य प्रयोजन	9
4.	ध्वनि - सिद्धांत	13
5.	वक्रोक्तिवाद	20
6.	लोंजाइनस का उदात्तवाद	23
7.	अनुकरण का सिद्धांत	26
8.	काव्य रस	28
9.	काव्य गुण	40
10.	शब्द शक्ति	44
11.	अलंकार	52
12.	काव्य भाषा सिद्धान्त	76
13.	अरस्तु का विरेचन सिद्धांत (384 ई. पू.- 322 ई. पू.)	81
14.	काव्य-रीति	82
15.	काव्य दोष	84
इकाई - IV : वैचारिक पृष्ठभूमि		
1.	भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन नवजागरण की अवधारण	1
2.	हिन्दी नवजागरण	2
3.	भारतेंदु व हिन्दी नवजागरण	3
4.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	3
5.	गाँधीवादी दर्शन	3
6.	अंबेडकर दर्शन	4
7.	लोहिया दर्शन	5
8.	मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अस्मितामूलक विमर्श	6
इकाई - V : हिन्दी कविता		
1.	रेवा तट (चंद्रबरदाई)	1
2.	अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ	1
3.	विद्यापति की पदावली (संपादक - डॉ. नरेन्द्र झा)	2
4.	कबीर (संपादक - हजारीप्रसाद द्विवेदी)	3
5.	जायसी ग्रंथावली (संपादक - रामचंद्र शुक्ल)	5
6.	सुरदास भ्रमरगीत सार (संपादक - रामचंद्र शुक्ल)	9
7.	तुलसीदास (रामचरितमानस -उत्तरकाण्ड)	14
8.	बिहारी सतसई (संपादक - जगन्नाथदास रत्नाकर)	17
9.	घनानंद कवित्त (संपादक - विश्वनाथ मिश्र)	18
10.	मीरा (संपादक - विश्वनाथ त्रिपाठी)	19

11.	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' **(**प्रियप्रवास)	19
12.	मैथिलीशरण गुप्त	22
13.	कामायनी	26
14.	निराला	29
15.	सुमित्रानंदन पंत	30
16.	महादेवी वर्मा	31
17.	रामधारी सिंह दिनकर	31
18.	नागार्जुन	38
19.	सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	39
20.	भवानीप्रसाद मिश्र	40
21.	मुक्तिबोध	40
22.	धूमिल	43
इकाई - VI : हिन्दी उपन्यास		
1.	हिन्दी उपन्यास का विकास	1
2.	देवरानी-जेठानी की कहानी - पण्डित गौरीदत्त	2
3.	परीक्षा गुरु - लाला श्रीनिवास दास	4
4.	शेखर : एक जीवनी अज्ञेय	7
5.	बाणभट्ट की आत्मकथा - हजारीप्रसाद द्विवेदी	8
6.	'मैला आँचल' - फणीश्वरनाथ 'रेणु' '	10
7.	झूठा - सच' यशपाल	11
8.	'मानस का हंस' - अमृतलाल नागर	13
9.	'तमस' - भीष्म साहनी	14
10.	'राग दरबारी - श्रीलाल शुक्ल	15
11.	'जिन्दगीनामा' **–** कृष्णा सोबती	17
12.	'आपका बंटी' - मन्नू भण्डारी	18
13.	'धरती धन न अपना'- जगदीश चन्द्र	19
इकाई - VII : हिन्दी कहानी		
1.	चन्द्रदेव से मेरी बातें (बंग महिला / राजेन्द्र बाला घोष)	1
2.	एक टोकरी -भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)	1
3.	राही (सुभद्रा कुमारी चौहान)	4
4.	ईदगाह (प्रेमचंद)	4
5.	कानों में कँगना (राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह)	4
6.	उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी)	5
7.	आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद)	5
8.	अपना अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार)	6
9.	फणीश्वरनाथ रेणु	6
10.	गैंग्रीन / रोज (अज्ञेय)	6
11.	कोसी का घटवार (शेखर जोशी)	7

12.	अमृतसर आ गया है (भीष्म साहनी)	7
13.	सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती)	8
14.	इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर (हरिशंकर परसाई)	8
15.	पिता (ज्ञानरंजन)	8
16.	राजा निरबंसिया (कमलेश्वर)	9
17.	परिंदे (निर्मल वर्मा)	9
	इकाई - VIII : हिन्दी नाटक	
1.	अंधेर नगरी – भारतेन्दु	1
2.	भारत दुर्दशा – भारतेन्दु	4
3.	स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद	5
4.	चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद	7
5.	ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद	8
6.	अन्धा युग – धर्मवीर भारती	8
7.	सिन्दूर की होली – लक्ष्मी नारायण मिश्र	9
8.	आधे-अधूरे – मोहन राकेश	10
9.	आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश	10
10.	आगरा बाजार – हबीब तनवीर	10
11.	बकरी – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	11
12.	एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष	11
13.	अंजो दीदी - उपेन्द्रनाथ अश्क	12
14.	महाभोज – मन्नू भंडारी	12
	इकाई - IX : हिन्दी निबंध	
1.	भारतेन्दु – दिल्ली दरबार दर्पण, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है	1
2.	प्रताप नारायण मिश्र - शिवमूर्ति	13
3.	बाल कृष्ण भट्ट – शिवशंभु के चिट्ठे	17
4.	रामचन्द्र शुक्ल - कविता क्या है	21
5.	हजारी प्रसाद द्विवेदी - नाखून क्यों बढ़ते हैं	26
6.	विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	28
7.	अध्यापक पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम	32
8.	कुबेरनाथ राय – उत्तराफाल्गुनी के आस-पास	39
9.	विवेकी राय - उठ जाग मुसाफिर	52
	इकाई - X : आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं	
1.	हिन्दी के प्रमुख लेखक एवं उनके यात्रावृत्त	1
2.	आत्मकथा	2
3.	तुलसी राम – मुर्दहिया	3
4.	मन्नू भण्डारी – एक कहानी यह भी	3
5.	हरिवंशराय बच्चन – क्या भूलूँ क्या याद करूँ	3
6.	रमणिका गुप्ता – आपहुदरी	4

7.	शिवरानी देवी – प्रेमचन्द घर में	4
8.	विष्णु प्रभाकर – आवारा मसीहा	5
9.	मुक्तिबोध – साप्ताहिक की डायरी	5
10.	रामधारी सिंह दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय	5
11.	हरिशंकर परसाई – भोलाराम का जीव	6
12.	कृष्ण चन्दर – जामुन का पेड़	6
13.	राहुल सांकृत्यायन – मेरी तिब्बत यात्रा	6
14.	अज्ञेय – अरे यायावर रहेगा याद	7
15.	रामवृक्ष बेनीपुरी – माटी की मूरतें	7
16.	महादेवी वर्मा – ठकुरी बाबा	9

III UNIT

साहित्यशास्त्र

काव्य-हेतु

हेतु = **कारण** 'हेतु' का शाब्दिक अर्थ है — *कारण*। अर्थात् जिन प्रमुख कारणों से कोई व्यक्ति किसी काव्य या कविता को रचने में सक्षम होता है, उन्हें ही **काव्य-हेतु** कहा जाता है।

- भारतीय मनीषियों (विद्वानों) द्वारा काव्य-लेखन के **प्रमुखतः तीन हेतु** स्वीकार किए गए हैं:
  1. **प्रतिभा** → (ईश्वर प्रदत्त शक्ति)
  2. **व्युत्पत्ति** → (स्वयं के प्रयासों, शास्त्रों के अध्ययन या सांसारिक अनुभव से अर्जित ज्ञान)
  3. **अभ्यास** → (बार-बार की दोहराव की प्रक्रिया)

काव्य-हेतुओं का विवेचन

1. अग्निपुराण

- काव्य-हेतुओं का सर्वप्रथम विवेचन *अग्निपुराण* में मिलता है।
- यहाँ **केवल एकमात्र शक्ति (प्रतिभा)** को ही काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया गया है।

"नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा। कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥"

- इस संसार में मनुष्य जन्म मिलना ही दुर्लभ है।
- मनुष्य जन्म पाकर विद्या प्राप्त करना और भी कठिन है।
- विद्या प्राप्त होने के बाद कवित्व शक्ति प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ है।
- क्योंकि काव्य-रचना करने की क्षमता केवल **ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा** से ही संभव है।

2. आचार्य भामह

- आचार्य भामह ने अपनी कृति **'काव्यालंकार'** में भी केवल **प्रतिभा** को ही काव्य हेतु माना है।

"गुरुदेशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम्। काव्यं तु जायते जातु कस्यचिद् प्रतिभावतः॥"

अर्थ:

- गुरु के द्वारा पढ़ाए जाने पर मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी शास्त्र पढ़ सकता है।
- परंतु काव्य-*रचना* केवल प्रतिभाशाली व्यक्ति द्वारा ही संभव है।

3. आचार्य दण्डी

- आचार्य दण्डी ने अपनी कृति **'काव्यदर्श'** में काव्य लेखन के **तीन प्रमुख हेतु** स्वीकार किए हैं:

"नैसर्गिकी प्रतिभा च, श्रुतं च बहु निर्मलम्। आनन्दश्चाभियोगोऽस्या: कारणं काव्यसम्पद:॥"

तीन काव्य-हेतु:

1. **नैसर्गिकी प्रतिभा** → जन्मजात, ईश्वर प्रदत्त शक्ति
2. **श्रेष्ठ शास्त्रों का अध्ययन** → (व्युत्पत्ति)
3. **आनन्दपूर्वक अभ्यास** → (अभियोग)

विशेष टिप्पणियाँ:

NOTE 1: आचार्य दण्डी को साहित्य जगत में *तीन काव्य-हेतु* स्वीकार करने वाला **प्रथम विद्वान** माना जाता है।

NOTE 2: उन्होंने यह भी लिखा कि यदि किसी व्यक्ति में **प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास** — ये तीनों हों, तो वह *श्रेष्ठ श्रेणी का काव्य* रच सकता है। लेकिन यदि **प्रतिभा का अभाव** हो, तो केवल व्युत्पत्ति और अभ्यास से *मध्यम श्रेणी का काव्य* भी रचा जा सकता है।

4. आचार्य मम्मट (12वीं शताब्दी)

- आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में मुख्यतः तीन और कुल चार काव्य-हेतु माने हैं:
  "शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याध्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतवस्तदुद्भवे॥"
- **चार काव्य-हेतु:**
  1. **शक्ति** → (प्रतिभा)
  2. **निपुणता** → (व्युत्पत्ति)
     [क] *शास्त्रीय व्युत्पत्ति* → शास्त्रों के अध्ययन से प्राप्त निपुणता
     [ख] *लौकिक व्युत्पत्ति* → संसारिक अनुभव से प्राप्त निपुणता
  3. **अभ्यास**
  4. **काव्यज्ञ की शिक्षा** → (काव्य-विशेषज्ञ से शिक्षण)

विभिन्न विद्वानों के अनुसार प्रतिपादित काव्य-हेतु

1. संस्कृत के अन्य विद्वानों के अनुसार काव्य-हेतु

क्र.	विद्वान का नाम	कुल काव्य-हेतु	विवरण
1.	आचार्य वामन	1	कवित्व बीज (प्रतिभा)
2.	आचार्य राजशेखर	2	(i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति
3.	आचार्य केशव मिश्र	1	(i) प्रतिभा — *"प्रतिभा कारण तस्य, व्युत्पत्तिः विभूषणम्"*
4.	आचार्य पंडित राज जगन्नाथ	1	(i) प्रतिभा
5.	आचार्य हेमचन्द्र	1	(i) प्रतिभा
6.	आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव	3	(i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास

विशेष: आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव ने काव्य-हेतुओं को *एक रूपक के रूप में* प्रस्तुत किया:

- काव्य / कविता → **वृक्ष**
- प्रतिभा → **बीज**
- व्युत्पत्ति → **मिट्टी (मृदा)**
- अभ्यास → **जल**

प्रतिभा को एकमात्र काव्य-हेतु मानने वाले संस्कृत विद्वान:

1. अग्निपुराण
2. भामह
3. केशव मिश्र
4. हेमचन्द्र
5. जगन्नाथ

2. हिन्दी विद्वानों के अनुसार प्रतिपादित काव्य-हेतु

(i) आचार्य श्रीपति *(कृति: काव्य सरोज)*

"शक्ति निपुणता लोकमत, वितपति अरु अभ्यास। अरु प्रतिभा ते होत है, ताको ललित प्रकाश॥"

➢ कुल **6 काव्य-हेतु:**

✓ शक्ति ✓ लोकमत ✓ अभ्यास

✓ निपुणता ✓ व्युत्पत्ति ✓ प्रतिभा

(ii) आचार्य सुखदेव मिश्र

"कारण देव प्रसाद जिहि, शक्ति कहत सब कोई। वितपति अरु अभ्यास मिलि, त्रय बिनु काव्य न होई॥"

➢ कुल **3 काव्य-हेतु:**

✓ शक्ति (प्रतिभा) ✓ व्युत्पत्ति ✓ अभ्यास

(iii) अन्य हिन्दी विद्वानों के अनुसार

क्र.	**विद्वान का नाम**	**काव्य-हेतु**	**विवरण**
1.	आचार्य भिखारीदास	3	(i) शक्ति (ii) लोकानुभव (iii) काव्य अध्ययन
2.	आचार्य कुलपति मिश्र	3	(i) शक्ति (ii) व्युत्पत्ति (iii) अभ्यास
3.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी	3	(i) प्रतिभा (मुख्य हेतु) (ii) व्युत्पत्ति (सहायक) (iii) अभ्यास
4.	महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत	2	(i) प्रतिभा (ii) व्युत्पत्ति

3. पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार प्रतिपादित काव्य-हेतु

क्र.	**विद्वान का नाम**	**काव्य-हेतु**	**विवरण**
1.	प्लेटो	1	मानसिक विक्षिप्तता
2.	अरस्तू	3	(i) अनुकरण (ii) सामंजस्य (iii) लय
3.	सिगमंड फ्रायड	2	(i) दमित कामनाएँ (ii) अतृप्त वासनाएँ
4.	एडलर	1	मन के अभाव या हीनता
5.	विलियम हडसन	4	(i) अभिव्यक्ति की इच्छा (ii) मानव व्यवहार में रुचि (iii) काल्पनिक जगत से अनुराग (iv) सौंदर्य अनुभूति
6.	युंग (Jung)	1	कवि के हृदय में स्थित *प्रभुत्व की कामना*

काव्य हेतुओं का विवरण:

1. युग/जुग ने कवियों को निम्नानुसार 3 श्रेणियों में विभाजित किया है:

➢ **अन्तर्मुखी कवि**

✓ ये कवि रीतिग्रंथ, लक्षण ग्रंथ, और गीतिकाव्य लिखते हैं।

➢ **बर्हिमुखी कवि**

✓ ये कवि कहानी और उपन्यास लिखते हैं।

➢ **उभयमुखी कवि**

✓ ये कवि महाकाव्य लिखते हैं।

2. काव्य हेतु (मुख्यतः 3 काव्य हेतुओं को स्वीकार किया जाता है):

➢ **प्रतिभा** ➢ **व्युत्पत्ति** ➢ **अभ्यास**

3. प्रतिभा

- प्रतिभा वह जन्मजात शक्ति है, जो किसी व्यक्ति के हृदय में उत्पन्न होती है और उसे नित्य नया करने के लिए प्रेरित करती रहती है। इसे ही प्रतिभा कहा जाता है।
- **प्रतिभा की परिभाषाएँ:**
  1. **भट्ट तौत / वाग्भट्ट / आचार्य हेमचन्द्र के अनुसार:**
     "नित्यं नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा प्रतिभा।" अर्थात, एक ऐसी बुद्धि (प्रज्ञा) जो मनुष्य को नित्य नया करने के लिए प्रेरित करती है। उसे ही **प्रतिभा** कहते हैं।
  2. **आचार्य अभिनव गुप्त के अनुसार:**
     "प्रतिभा अपूर्ववस्तु निर्माणक्षमा प्रज्ञा।" अर्थात, एक ऐसी बुद्धि जो किसी मनुष्य को किसी अपूर्व या विशिष्ट वस्तु का निर्माण करने की क्षमता प्रदान करती है। उसे ही **प्रतिभा** कहते हैं।
  3. **आचार्य मम्मट के अनुसार:**
     "शक्तिः (प्रतिभा) कवित्वबीजरूपः संस्कार विशेष।" अर्थात, एक ऐसी शक्ति जो हमारे हृदय में कवित्व का बीज बोती है। उस कवित्व बीज रूपी संस्कार विशेष को ही शक्ति या **प्रतिभा** कहा जाता है।
  4. **आचार्य वामन के अनुसार:**
     "कवित्वबीजं प्रतिभानं कवित्वस्थ बीजम्।" अर्थात, कवित्व या काव्य रचना के बीज को ही **प्रतिभा** कहते हैं।
- **प्रतिभा की प्रमुख विशेषताएँ:**
  1. **प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त जन्मजात शक्ति** है।
  2. **प्रतिभा नित्य नवनवोन्येषशालिनी प्रज्ञा** है।
  3. **प्रतिभा कवित्व बीज रूप संस्कार विशेष** है।
  4. भारतीय मनीषियों (विद्वानों) के द्वारा प्रतिपादित तीन काव्य हेतुओं में **प्रतिभा** को सर्वप्रमुख काव्य हेतु माना जाता है।
  5. **प्रतिभा के कारण ही कवि** अपने काव्य में 'रस, छंद, गुण, अलंकार' आदि साहित्यिक तत्वों का प्रयोग करने में सफल होते हैं।

4. प्रतिभा के भेद

- **आचार्य राज शेखर** के द्वारा स्वरचित **काव्य मिमांसा** रचना में प्रतिभा के प्रमुखतः 2 भेद प्रतिपादित किये गये हैं:
  1. **कारयित्री प्रतिभा (कवि)**
     - ✓ यह प्रतिभा कवि के साथ संबंधित होती है।
     - ✓ जिस शक्ति के कारण कवि अपनी काव्य रचना करने में सक्षम होता है, वही **कारयित्री प्रतिभा** कहलाती है।
  2. **भावयित्री प्रतिभा (पाठक)**
     - ✓ यह प्रतिभा पाठकों से संबंधित होती है।
     - ✓ जिस शक्ति के कारण पाठक किसी काव्य के अर्थ या भाव को समझने में सक्षम होते हैं, वही **भावयित्री प्रतिभा** कहलाती है।
- **आचार्य रुद्रट** के द्वारा स्वरचित **काव्यालंकार** रचना में प्रतिभा के 2 भेद मानें गए हैं:
  1. **सहजा प्रतिभा**
     - ✓ यह ईश्वर प्रदत्त जन्मजात शक्ति है।
  2. **उत्पाद्या प्रतिभा**
     - ✓ यह अपने प्रयासों से अर्जित शक्ति है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

5. व्युत्पत्ति

- व्युत्पत्ति वह शक्ति या ज्ञान है, जो मनुष्य अपने प्रयासों से अर्जित करता है। इसे **निपुणता, कुशलता, विद्वता, पाण्डित्य** इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है।
- **व्युत्पत्ति की परिभाषा: आचार्य राजशेखर** ने व्युत्पत्ति की परिभाषा देते हुए लिखा:
  "उचितानुचितौ विवैको व्युत्पत्ति:।" अर्थात, उचित (सही) और अनुचित (गलत) का ज्ञान करवा देने वाली शक्ति को ही **व्युत्पत्ति** कहते हैं।
- **व्युत्पत्ति के भेद (आचार्य मम्मट के अनुसार):**

1. **शास्त्रीय व्युत्पत्ति**
   - ✓ यह वह ज्ञान है, जो शास्त्रों और पूर्व में लिखे गए ग्रंथों का अध्ययन करने से अर्जित किया जाता है।
2. **लौकिक व्युत्पत्ति**
   - ✓ यह वह ज्ञान है, जो सांसारिक अनुभवों से अर्जित किया जाता है।

NOTE: किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए ये दोनों व्युत्पत्तियाँ एक-दूसरे की पूरक होती हैं। अर्थात्, शास्त्रों का अध्ययन और सांसारिक अनुभव दोनों मिलकर कार्य में सफलता दिलाते हैं।

6. अभ्यास

- अभ्यास एक ही कार्य को बार-बार करना है। **"अभ्यासों हि कर्मसु कौशलम्"** — अर्थात, अभ्यास करने से ही कार्य में कुशलता प्राप्त होती है। जब किसी कार्य को पहली बार किया जाता है, तो उसमें कुछ कमियाँ हो सकती हैं, लेकिन बार-बार अभ्यास करने से उन कमियों को दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार काव्य रचना में भी बार-बार अभ्यास से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

काव्य के लक्षण

I. संस्कृत विद्वानों के अनुसार काव्य के लक्षण

1. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य का लक्षण:

- आचार्य मम्मट ने काव्य के लक्षण को इस प्रकार व्यक्त किया:
  "तददौषौ शब्दार्थौं सगुणावनलङ्कृति पुनः क्वापि।।" (ऐसा शब्द या अर्थ जो दोषों से रहित होता है, प्रसाद, ओज, माधुर्य आदि गुणों से युक्त होता है, और कभी-कभी अलंकारों से रहित भी हो सकता है।)
- **आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण में तीन प्रमुख तत्व हैं:**
  1. **अदोषौ** → दोषों से रहित शब्दार्थ
  2. **सगुणौ** → गुणों से युक्त शब्दार्थ
  3. **अनलङ्कृति पुनः क्वापि** → कभी-कभी अलंकारों से रहित शब्दार्थ
- आचार्य मम्मट ने दो **अनिवार्य लक्षण** और एक **एच्छिक लक्षण** का उल्लेख किया है:
  - ✓ **अनिवार्य लक्षण**: (i) अदोषौ, (ii) सगुणौ
  - ✓ **एच्छिक लक्षण**: अलंकार हो भी सकता है और नहीं भी।

2. आचार्य विश्वनाथ के अनुसार:

"वाक्य रसात्मकं" अर्थात, वह शब्द जो रसयुक्त हो, वही काव्य कहलाता है।

3. आचार्य पडितराज जगन्नाथ के अनुसार:

"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।" अर्थात, वह शब्द जो रमणीय अर्थ को प्रतिपादित करता है, वही काव्य कहलाता है। रमणीयता: "क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपम् रमणीयता" अर्थात, जो पल-पल नया रूप प्राप्त करता है, वही रमणीयता है।

4. आचार्य वाग्भट (वाग्मट) के अनुसार:

"शब्दार्थो निदोर्षो सगुणौ प्राय: सालंकारों च काव्यम्।" अर्थात, काव्य वह शब्दार्थ है, जो दोषों से रहित, गुणों से युक्त और प्राय: अलंकारों से सज्जित होता है।

5. आचार्य भामह के अनुसार:

"शब्दार्थो सहितो काव्य पद्य पद्य च द्विधा। संस्कृत प्राकृत चान्यदपभ्रंश: इति त्रिधा।"

➢ अर्थात, शब्द और अर्थ के समेकित रूप को ही काव्य कहा जाता है। रचना के आधार पर काव्य दो प्रकार का होता है:

(i) गद्य काव्य
(ii) पद्य काव्य

➢ भाषा के आधार पर काव्य तीन प्रकार का होता है:

(क) संस्कृत काव्य
(ख) प्राकृत काव्य
(ग) अपभ्रंश काव्य

6. आचार्य हेमचन्दु के अनुसार:

"अदोषौ सगुणौ सालड़कारौ च शब्दार्थो काव्यम्।"

➢ अर्थात, ऐसा शब्द या अर्थ जो दोषों से रहित और गुणों तथा अलंकारों से युक्त होता है, वही काव्य कहलाता है।

7. आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव के अनुसार:

"निदोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा। सालड्कार रसानेक वृत्तिर्वाक्काव्य नाम भाक।"

➢ अर्थात, वह वाणी जो दोषों से रहित होती है, अच्छे लक्षणों से युक्त होती है, और सभी रीतियों, गुणों, अलंकारों और रसों से सुसज्जित होती है, वही काव्य कहलाती है।

प्रश्न: आचार्य पीयूषवर्ष जयदेव द्वारा प्रतिपादित काव्यलक्षण में प्रयुक्त "वाक्" शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) शब्द ही काव्य है।
(B) अर्थ ही काव्य है।
(C) शब्दार्थ ही काव्य है।
(D) इनमें से कोई नहीं।

8. आचार्य कुन्तको (11वीं शताब्दी) के अनुसार:

"शब्दार्थो सहितौ वक्र कवि व्यापारशालिनी बन्धे व्यवस्थितौ काव्य तद्विदाल्हदकारिणी।"

➢ अर्थात, वह काव्य जो शब्द और अर्थ से मिलकर वक्र रूप में व्यवस्थित होता है, और जिसमें कवि का व्यापार (अर्थ का प्रवाह) शालीन रूप से बंधा रहता है, वही काव्य कहलाता है।

Unleash the topper in you

9. आचार्य दण्डी के अनुसार:

"शरीर तावदिष्टार्ध व्यावच्छिन्ना पदावली।"

➢ अर्थात, वह पदावली जो वांछित या अभीष्ट अर्थ को प्रकट करती है, वही काव्य कहलाती है।

10. महर्षि वेदव्यास के अनुसार:

"संक्षेपादवाक्य भिष्टार्थ व्यावच्छिन्ना पदावली। काव्य स्फुरदलङ्कार गुणावददोष वर्मितम्।"

➢ अर्थात, वह संक्षिप्त वाक्य या पदावली जो वांछित अर्थ को प्रकट करती है, जिसमें अलंकारों का स्पष्ट प्रयोग होता है, गुणों से युक्त और दोषों से रहित होती है, वही काव्य कहलाती है।

11. आचार्य भरतमुनि (नाट्यशास्त्रकार) के अनुसार:

1. **"रसमयी सुखबोध्य मृदुललित पदावली।"**
   ✓ काव्य वह है जो रस से परिपूरित और सुखदायक होता है।
2. **"मृदुललित पदाढय गूढशब्दार्थ हीनं नहीं जनपदसुखबोध्यं युक्तिमन्नत्ययोज्यम्।"**
   ✓ काव्य वह है जो गूढ़ अर्थों से रहित नहीं होता, और जो जनपद को सुखदायक और युक्तिसंगत होता है।
3. **"बहुरस कृतमार्ग सन्धिसन्धान युक्तम् स भवति शुभकाव्यं नाटकप्रेक्षकाणाम्।"**
   ✓ काव्य वह है जिसमें बहुरस की प्रक्रिया और मार्ग की संधि होती है, और जो नाटक के दर्शकों के लिए शुभ होता है।

II. हिन्दी के विद्वानों के अनुसार काव्य लक्षण

शब्द सुमति मुख ते कढ़ै, ले पद वचननि अध। छंद भाव भूषण सरस, सो कहि काव्य समर्थ।।

1. देव कवि के अनुसार →

"सबद जीव तिहि अरथ मन, रसमय सुजस शरीर। चलत वहै जुग छंद गति, अलंकार गंभीर।।"

- ✓ देव कवि ने एक रूपक की कल्पना करते हुए काव्य को शरीर के रूप में माना है।
- ✓ शब्द को उस काव्य रूपी शरीर की आत्मा (जीव) के रूप में तथा अर्थ को उसके मन के रूप में माना है।
- ✓ वर्णिक एवं मात्रिक दोनों प्रकार के छंद उस काव्य शरीर को गति प्रदान करते हैं तथा अलंकार इसे गंभीरता या विशिष्टता प्रदान करते हैं।

2. 'आचार्य कुलपति मिश्र' के अनुसार →

"दोष रहित अरु गुण सहित, कछुक अल्प अलंकार। सबद अरथ सो कवित है, ताको करो विचार।।"

"जन ते अद्भुत सुख सदन, सबद अरथ कवित। यह लक्षण मैनें कियौ, समझि ग्रंथ बहु चित्र।।"

- ✓ **आचार्य मम्मट** के काव्य लक्षण का हिन्दी अनुवाद मात्र करते हुए आचार्य कुलपति मिश्र ने लिखा है— ऐसा शब्द या अर्थ जो दोषों से रहित होता है, सभी गुणों से युक्त होता है तथा जिसमें कुछ अलंकार भी होते हैं, उसे ही काव्य के नाम से जाना जाता है।
- ✓ **चिन्तामणि त्रिपाठी →**

  "छंद निबद्ध सुपद्य कहि, गद्य होत बिन छंद। भाषा छंद निबद्ध सुनि, सुकवि होत सानंद।।"
- ✓ अपना मौलिक काव्य लक्षण प्रतिपादित करते हुए आचार्य कुलपति मिश्र ने लिखा है कि इस संसार में सबसे अधिक अद्भुत एवं विलक्षण सुख प्रदान करने वाला शब्द एवं अर्थ ही काव्य कहलाता है। यह लक्षण इन्होंने अनेक ग्रंथों का अध्ययन करके प्रतिपादित किया है।

3. आचार्य चिन्तामणि त्रिपाठी के अनुसार →

"सगुण अलंकारन सहित, दोष रहित जो होइ। सबद अरथ वारौं कवित, विबुध कहत सब कोई।।"

- ✓ अर्थात्, आचार्य हेमचन्द्र के काव्य लक्षण का हिन्दी अनुवाद करते हुए चिन्तामणि त्रिपाठी ने लिखा है— ऐसा शब्द/अर्थ जो गुणों एवं अलंकारों से युक्त होता है तथा दोषों से रहित होता है, उसे ही विद्वानों द्वारा काव्य कहा गया है।

4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार →

- ✓ जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।
- ✓ हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे ही कविता कहते हैं।
- ✓ सत्त्वोद्रेक या हृदय की मुक्ति साधना के लिए किया गया शब्द विधान ही कविता या काव्य कहलाता है।
- ✓ कविता जीवन और जगत की अभिव्यक्ति है।

5. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार →

- ✓ किसी प्रभावोत्पादक एवं मनोरंजक लेख, बात या वक्तृता का नाम ही कविता है।
- ✓ अंतः कला की वृत्तियों के चित्र का नाम ही कविता है।
- ✓ सुरम्यता ही कमनीय कान्ति है, अमूल्य आत्मा रस है मनोहर। शरीर तेरा शब्दार्थ मात्र है, नितांत यही यही यही।।

6. सुदामा प्रसाद पांडेय 'धूमिल' के अनुसार →

- ✓ कविता शब्दों की अदालत में खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा है।

7. **जयशंकर प्रसाद के अनुसार** →

- ✓ सत्य की अपने पूर्ण सौंदर्य के साथ की गई अभिव्यक्ति ही कविता कहलाती है।
- ✓ कविता आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है। इसका संबंध विज्ञान, विश्लेषण एवं विकल्प से नहीं है। वह एक श्रेयमयी, प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।"
- ✓ **भिखारीदास – काव्य निर्णय** रस कविता को अंग, भूषण हैं भूषण सकल। गुण स्वरूप औ रंग, दूषण करे कुरूपता।।

8. **सुमित्रानंदन पंत के अनुसार** →

- ✓ कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।
- ✓ **NOTE** → सुमित्रानंदन पंत के अनुसार सम्पूर्ण साहित्य जगत की सबसे पहली कविता किसी वियोगी व्यक्ति द्वारा लिखी गई मानी जाती है।
- ✓ इसी संबंध में उन्होंने लिखा है— "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा ज्ञान, निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजाना।"

9. **महादेवी वर्मा के अनुसार** →

- ✓ कविता किसी कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है, एवं यह चित्रण इतना ठीक होता है कि उससे वैसी ही भावनाएँ दूसरों के हृदय में भी उत्पन्न होने लग जाती हैं।
- ✓ कविता हमें असीम सत्य की झाँकी दिखाती है।

10. **बाबू गुलाब राय के अनुसार** →

- ✓ काव्य संसार के प्रति कवि की भावप्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं के श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति है।
- ✓ **कवि ठाकुर** → "पंडित और प्रवीनन को, पोइ चित्त हरै जो सो कविता।

III. पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार काव्य-लक्षण

1. **कॉलरिज के अनुसार** → "*Poetry is the best words in their best order.*" अर्थात् — उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम विधान ही कविता है। **मिल्टन** — कविता सहज संवेदनात्मक एवं रागात्मक होनी चाहिए।
2. **ड्राइडन के अनुसार** → "*Poetry is the articulate music.*" अर्थात् — सुस्पष्ट संगीत ही कविता है। **हडसन** → कविता, कल्पना और संवेग के द्वारा जीवन की व्याख्या है।
3. **मैथ्यू अर्नाल्ड के अनुसार** → "*Poetry is at bottom a criticism of life.*" अर्थात् — कविता मूलतः जीवन की आलोचना है।
4. **कार्लाइल के अनुसार** → "*Poetry is the musical thoughts.*" अर्थात् — संगीतमय विचार ही कविता है।
5. **डेनिस के अनुसार** → "*Poetry is the imitation of nature.*" अर्थात् — कविता प्रकृति की अनुकृति है।

➢ **सारांश** → उपर्युक्त समस्त परिभाषाओं के आधार पर कविता या काव्य के वास्तविक स्वरूप को अभिव्यक्त करने के लिए निम्नलिखित तीन लक्षण प्रतिपादित किए जाते हैं—

1. मानवीय अनुभूति
2. भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति
3. अभिव्यक्ति में कलात्मकता

➢ **अर्थात्, मान**वीय अनुभूतियों की भाषा के माध्यम से की गई रसात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति ही *काव्य* कहलाती है।

IV. काव्य प्रयोजन

प्रयोजन = उद्देश्य

I. संस्कृत आचार्यों के अनुसार काव्य प्रयोजन

1. आचार्य भरतमुनि के अनुसार →

"धर्म यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्। लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद्भविष्यति।।"

"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्। विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद्भविष्यति।।"

➢ **अर्थात्:** आचार्य भरतमुनि के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुख **6 प्रयोजन** माने गए हैं—

1. धर्म की प्राप्ति
2. यश की प्राप्ति
3. आयु में वृद्धि
4. हित (भला) करना / कल्याण
5. बुद्धि का विकास
6. लोगों को उपदेश देना

➢ काव्य लेखन का एक सहायक प्रयोजन भी प्रस्तुत करते हुए भरतमुनि ने लिखा है कि—

दुःख, श्रम और शोक से पीड़ित तपस्वियों (लोगों) को **शांति प्रदान करना** ही काव्य लेखन का प्रयोजन माना जाता है।

2. आचार्य भामह के अनुसार →

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च। करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबंधनम्।।"

➢ अर्थात्: आचार्य भामह के अनुसार काव्य लेखन के **4 प्रमुख प्रयोजन** माने गए हैं—

1. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति
2. कलाओं में निपुणता की प्राप्ति
3. कीर्ति (यश) की प्राप्ति
4. प्रीति (आनंद) की प्राप्ति

3. आचार्य मम्मट के अनुसार →

"काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः परिनिर्वृत्तये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे॥"

➢ अर्थात्: आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य लेखन के **6 प्रयोजन** माने गए हैं—

1. यश की प्राप्ति के लिए
2. अर्थ (धन) की प्राप्ति के लिए
3. व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए
4. तुरन्त आत्मसंतुष्टि / आनन्द प्राप्ति के लिए
5. अमंगल (अशुभ) के विनाश के लिए
6. कान्ता के समान (प्रेमपूर्ण) उपदेश देने के लिए

नोट: आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित इन 6 काव्य प्रयोजनों में से 3 का संबंध **कवि / लेखक** से तथा 3 का संबंध **पाठकों** से माना जाता है:

(क) कवि या लेखक से संबंधित प्रयोजन:

1. यशसे → यश की प्राप्ति
2. अर्थकृते → अर्थ की प्राप्ति
3. शिवेतरक्षतये → अमंगल से रक्षा

(ख) पाठकों से संबंधित प्रयोजन:

1. व्यवहारविदे → व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति
2. सद्यः परिनिर्वृत्तये → तत्काल आत्मसंतुष्टि / आनन्द
3. कान्तासम्मितयोपदेशयुजे→कान्ता के समान उपदेश

NOTE → आचार्य मम्मट द्वारा प्रतिपादित इन 6 काव्य प्रयोजनों में से **'सद्यः परिनिर्वृत्तये'** — अर्थात् तत्काल आत्मसंतोष / आनन्द की प्राप्ति को **'सर्वश्रेष्ठ' या 'सकल-मौलिभूत' काव्य प्रयोजन** माना गया है।

काव्य प्रयोजन का विस्तार

1. काव्य यशसे →

➢ इस प्रयोजन का संबंध **कवि / लेखक** से माना जाता है।

➢ **अर्थात्:** काव्य लेखन से कवि को **यश** की प्राप्ति होती है। वह संसार में सदा-सदा के लिए **अमर** हो जाता है।

➢ **उदाहरण:** हिन्दी साहित्य में **मलिक मोहम्मद जायसी** द्वारा रचित *पद्मावत* महाकाव्य इसी प्रयोजन से लिखा गया था। इस संबंध में स्वयं जायसी ने लिखा है— **"औ मन जानि कवित अस कीन्हा। मकु यह रहे जगत महँ चीन्हा।।"**

2. काव्य अर्थकृते →

- इस प्रयोजन का संबंध भी **कवि / लेखक** से माना जाता है।
- **अर्थात्:** काव्य लेखन से कवि को **धन** की प्राप्ति होती है।
- **उदाहरण:** हिन्दी साहित्य जगत में **बिहारी, केशवदास, बीरबल** आदि कवियों ने इसी प्रयोजन से काव्य लेखन कार्य किया। **कवि बिहारी** को तो प्रत्येक पद रचना के लिए **एक सोने की मोहर** मिलने का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

3. काव्य व्यवहारविदे →

- इस प्रयोजन का संबंध **पाठकों** से माना जाता है।
- **अर्थात्:** किसी भी काव्य रचना को पढ़ने पर पाठकों को **व्यवहारिक ज्ञान** की प्राप्ति होती है।
- **निम्नलिखित रचनाएँ इसी प्रयोजन से रचित मानी जाती हैं—**

क्र. सं.	**रचना का नाम**	**कवि / लेखक का नाम**
1.	रामायण	महर्षि वाल्मीकि
2.	रामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास
3.	पंचतंत्र	पं. विष्णु शर्मा
4.	हितोपदेश	नारायण पंडित
5.	नीतिशतक	भर्तृहरि

4. काव्य शिवेतरक्षतये → *(अमंगल का विनाश)*

- "शिवेतरक्षतये" = *शिव + इतर + क्षतये*, जिसका शाब्दिक अर्थ है — "**अमंगल का विनाश**"। इस प्रयोजन का संबंध **कवि लेखक** से माना जाता है।
- अर्थात्: अपने किसी **अमंगल** के विनाश के लिए भी कवियों द्वारा काव्य रचना की जाती है।

निम्नलिखित रचनाएँ इसी प्रयोजन से लिखी गई हैं—

क्र. सं.	**रचना का नाम**	**कवि / लेखक का नाम**
1.	हनुमान बाहुक	गोस्वामी तुलसीदास
2.	सूर्याष्टक	मयूरभट्ट
3.	चंडीशतक	बाणभट्ट
4.	कुरुक्षेत्र	रामधारी सिंह 'दिनकर'
5.	अंधायुग	धर्मवीर भारती

5. काव्य सद्यः परिनिर्वृत्तये →

- इस प्रयोजन का संबंध **पाठकों** से माना जाता है।
- अर्थात्: काव्य रचनाओं को पढ़ने पर पाठकों को **तुरन्त आत्मसंतुष्टि** या **आनंदानुभूति** होती है।
- इसे 'सर्वश्रेष्ठ' या **'सकल मौलिभूत'** काव्य प्रयोजन भी माना जाता है।

6. काव्यं कान्तासम्मितयोपदेशयुजे →

- इस प्रयोजन का संबंध भी **पाठकों** से माना जाता है।
- **अर्थात्:** काव्य रचना को पढ़ने पर पाठकों को **पत्नी (कान्ता) के समान मधुर और हितकर उपदेश** की प्राप्ति होती है।
- **प्रभु सम्मित उपदेश** → यह उपदेश हमारे लिए हितकर तो होता है, परन्तु रुचिकर नहीं होता है, फिर भी हम इसको मानने के लिए बाध्य होते हैं। समस्त प्रकार का 'वैदिक ज्ञान' प्रभु सम्मित उपदेश माना जाता है।

- **मित्र सम्मित उपदेश** → यह उपदेश हमारे लिए हितकर भी होता है एवं रुचिकर भी होता है, परन्तु इसको मानने के लिए कोई बाध्यता नहीं होती है। 18 पुराणों एवं इतिहास ग्रंथों का ज्ञान मित्र सम्मित उपदेश ही माना जाता है।
- **कान्ता सम्मित उपदेश** → यह उपदेश हमारे लिए हितकर भी होता है एवं रुचिकर माना जाता है, तथा समस्त लोगों के द्वारा इस उपदेश को सहज रूप में स्वीकार भी कर लिया जाता है। समस्त प्रकार की काव्य रचनाओं का ज्ञान कान्ता सम्मित [वेदों, पुराणों व इतिहास ग्रंथों को छोड़कर] उपदेश ही माना जाता है।
- **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार** → "चतुर्वर्ग फल प्राप्तिः सुखादल्पधियापति, काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते" अर्थात आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य लेखन के प्रमुख दो प्रयोजन माने गए हैं **यथा** →
  - ✓ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष — इन चारों पुरुषार्थों (चतुर्वर्ग) के फल की प्राप्ति।
  - ✓ अल्प बुद्धि लोगों को भी सुख की प्राप्ति।

संस्कृत के अन्य विद्वानों के अनुसार काव्य प्रयोजन:

क्रमांक	विद्वान का नाम	प्रयोजन	काव्य के प्रयोजन (उद्देश्य)
1.	आचार्य रुद्रट (काव्यालंकार)	4	(i) विश्वव्यापी यश (ii) विपत्ति नाश (iii) अलौकिक आनंद (iv) आप्त-कामना
2.	आचार्य वामन जयदेव (चंद्रालोक)	2	(i) प्रीति (दृष्टि प्रयोजन) (ii) कीर्ति (अदृष्टि प्रयोजन)
3.	आचार्य आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक)	1	(i) प्रीति (हृदय का आह्लाद)
4.	आचार्य राजशेखर	1	(i) कीर्ति
5.	आचार्य कुंतक (वक्रोक्ति)	2	(i) अलौकिक आनंद का जनक (ii) व्यवहार का साधक
6.	आचार्य दण्डी	2	(i) यश की प्राप्ति (ii) ज्ञान की प्राप्ति

II. <u>हिन्दी के विद्वानों के अनुसार काव्य प्रयोजन</u>

1. गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार

"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।"

"कीर्ति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।"

- **अर्थात:** स्वान्तः सुखाय — कवि को स्वयं सुख की प्राप्ति।
- लोगों का भला करना।

2. मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार

- केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
- **अर्थात:** लोगों का मनोरंजन करना।
- लोक को समुचित उपदेश देना।

3. आचार्य कुलपति मिश्र के अनुसार

जस, संपत्ति, आनंद अति, दुरितन डारै खोई। होत कवित्त ते चतुरई, जगत राग बस होई।।"

- **अर्थात:**
  - ✓ यश की प्राप्ति
  - ✓ पापों का विनाश
  - ✓ संपत्ति (धन) की प्राप्ति
  - ✓ चतुरता की प्राप्ति
  - ✓ अलौकिक आनंद की प्राप्ति
  - ✓ सांसारिक प्रेम की प्राप्ति

Toppersnotes Unleash the topper in you

4. आचार्य सोमनाथ के अनुसार

"कीर्ति, वित्त, विनोद अरु, अति मंगल को देति। करै भलो उपदेश नित, वह कवित्त चित्र चेति।।"

- **अर्थात:**
  - ✓ कीर्ति (यश) की प्राप्ति
  - ✓ वित्त (धन) की प्राप्ति
  - ✓ विनोद (मनोरंजन) की प्राप्ति
  - ✓ मंगल कामना की प्राप्ति
  - ✓ लोगों की भलाई हेतु उपदेश देना

हिन्दी के अन्य विद्वानों के अनुसार काव्य प्रयोजन:

क्र.सं.	विद्वान का नाम	कुल प्रयोजन	विवरण
1	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	2	(i) लोकमंगल की साधनावस्था (ii) रसानुभूति
2	सुमित्रानंदन पंत	1	(i) मुक्त जीवन सौंदर्य की अभिव्यक्ति
3	देव कवि	1	(i) यश (अमरता)
4	कबीरदास	1	(i) लोकमंगल
5	सूरदास	1	(i) आनंद
6	महावीर प्रसाद द्विवेदी	2	(i) आनंद की प्राप्ति (ii) ज्ञान की प्राप्ति
7	हजारी प्रसाद द्विवेदी	1	(i) लोकमंगल
8	गजानन माधव मुक्तिबोध	1	(i) सांस्कृतिक परिष्कार
9	मुंशी प्रेमचंद	3	(i) मनोरंजन (ii) परिष्कृति (उपदेश) (iii) उद्घाटन
10	जयशंकर प्रसाद	2	(i) मनोरंजन (ii) शिक्षा
11	अयोध्या प्रसाद सिंह	5	(i) सरसता (ii) मुग्धता (iii) ज्ञान (iv) उपदेश (v) आनंद

III. <u>पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार काव्य प्रयोजन:</u>

कर.सं.	विद्वान का नाम	कुल प्रयोजन	विवरण
1	प्लेटो	1	(i) लोकमंगल
2	टॉल्सटॉय	2	(i) लोकमंगल
3	रस्किन	1	(i) लोकमंगल
4	शिलर	2	(i) आनंद
5	ड्राइडन	1	(i) आनंद
6	अरस्तु	2	(i) नीति (ii) आनंद
7	शैली / शैले	2	(i) नीति (ii) आनंद
8	मैथ्यू अर्नाल्ड	2	(i) नीति (ii) आनंद

NOTE: पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार काव्य लेखन के सारांशतः निम्नलिखित 7 **प्रयोजन** स्वीकार किए गए हैं:

- काव्य "कला, कला के लिए" है।
- काव्य "कला, जीवन के लिए" है।
- काव्य "कला, जीवन से पलायन के लिए" है।
- काव्य "मनोरंजन के लिए" है।

- काव्य "आत्म-साक्षात्कार के लिए" है।
- काव्य "सर्जनात्मक आवश्यकता की पूर्ति के लिए" है।
- काव्य "अभिव्यंजना (रहस्यपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति) के लिए" है।

विशेष तथ्य: पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित इन सभी काव्य प्रयोजनों को 'कलामतवाद' के नाम से भी जाना जाता है। इन सातों काव्य प्रयोजनों का सर्वप्रथम उल्लेख 1845 ई. में विक्टर कुर्जों नामक विद्वान ने किया था।

ध्वनि - सिद्धांत

- ध्वनि शब्द "ध्वन्" धातु में "इ" प्रत्यय के जुड़ने से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है — "नाद" या "गूंज"।
- साहित्य का ध्वनि सिद्धांत सर्वप्रथम 9वीं शताब्दी में 'आचार्य आनन्दवर्धन' द्वारा स्वरचित 'ध्वन्यालोक' रचना में प्रतिपादित किया गया था।
- आचार्य आनन्दवर्धन कश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा के 'सभापंडित' या 'आश्रित कवि' माने जाते हैं।
- इनके पिता का नाम नोण या नोणोपाध्याय था।
- आचार्य आनन्दवर्धन का ध्वनि सिद्धांत अलंकार और रस को भी अपने अंदर समाहित कर लेता है। जिसके कारण आचार्य पं. राज जगन्नाथ ने आचार्य आनन्दवर्धन को "अलंकार रस रणी व्यवस्थापक" के नाम से भी पुकारा है।
- आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वनि सिद्धांत को प्रतिपादित करने के लिए अपनी 'ध्वन्यालोक' रचना में कुल 129 कारिकाएँ लिखी हैं।
- इस रचना में ध्वनि सिद्धांत की सम्पूर्ण विषयवस्तु को निम्नानुसार 3 तरीकों से प्रस्तुत किया गया है: **ध्वनि सिद्धांत** = **अलंकार** + **रस** + **विषयवस्तु**
- **विषयवस्तु को 3 तरीकों से प्रस्तुत किया गया है:** यथा ⇒
  - ✓ **कारिका** - श्लोक रूप में लिखे गए लक्षण (कुल 129 कारिकाएँ)
  - ✓ **वृत्ति** - श्लोक रूप में लिखे गए लक्षणों की गद्य रूप में की गई व्याख्या [श्लोक + गद्य व्याख्या]
  - ✓ **उदाहरण** - उन लक्षणों को सिद्ध करने के लिए प्रस्तुत प्रमाण।
- आनन्दवर्धन की 'ध्वन्यालोक' रचना को 4 खंडों/भागों में विभाजित किया गया है, जिन्हें 'उद्योत' नाम से पुकारा जाता है। अर्थात् इस सम्पूर्ण रचना में कुल 4 उद्योत प्राप्त होते हैं।
- **साहित्य का ध्वनि-सिद्धांत मूलतः** व्याकरण शास्त्र के 'स्फोटवाद सिद्धांत' पर आधारित माना जाता है।
- **'स्फोटवाद'** — 'वाक्यपदीय' रचना के लेखक आचार्य भर्तृहरि ने स्फोटवाद की परिभाषा देते हुए लिखा है: "जिस शक्ति के द्वारा किसी शब्द के अर्थ का विस्फोट होता है, अर्थात शब्द के अर्थ को ग्रहण किया जाता है, उसे ही स्फोटवाद कहते हैं।"
- कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक शब्द का हमारे हृदय में कोई न कोई सूक्ष्म अर्थ नित्य मौजूद रहता है। यह अर्थ जिस शक्ति के द्वारा हृदय से बाहर निकलता है, उसे व्याकरण में स्फोटवाद और साहित्य में ध्वनि-सिद्धांत कहा जाता है।

ध्वनि की परिभाषाएँ

1. **आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार:** "यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनी कृतस्वार्थो। व्यक्तः काव्यविशेषः सः ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः।" अर्थात् — जब किसी पद में प्रयुक्त कोई शब्द अपने मुख्य अर्थ को एवं अर्थ अपने वाच्यार्थ/मुख्यार्थ को पूर्णतः त्याग देता है और अन्य अर्थ प्रकट करने लगता है, तो उस प्रकार के काव्य विशेष को वैयाकरणों (सूरिभिः) द्वारा "ध्वनि" के नाम से पुकारा गया है।
2. **आचार्य मम्मट के अनुसार:** "इदयुत्तमति शायिनी व्यंग्ये वाच्याद् ध्वनिरिति बुधैः कथितः" जब किसी पद में वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ/छन्यार्थ अधिक प्रभावशाली या चमत्कारपूर्ण हो जाता है, तो उसे ही विद्वानों द्वारा ध्वनि के नाम से पुकारा गया है तथा ध्वनि काव्य ही काव्य श्रेणी का काव्य माना जाता है।

3. **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार:** "वाच्यातिशयिनी व्यंग्ये ध्वनिस्तत्काव्ययुत्तमम्।" अर्थात् — जब किसी पद में वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक प्रभावशाली या चमत्कारपूर्ण हो जाता है, तो वह 'ध्वनि काव्य' कहलाता है तथा यह 'ध्वनि काव्य' ही उत्तम श्रेणी का काव्य भी माना जाता है।
4. **आचार्य रामचन्द्र तिवारी के अनुसार:** "जिस प्रकार एक सुंदर नायिका के अंग-प्रत्यंग में सौंदर्य के अलावा भी लावण्य की छटा मौजूद रहती है, उसी प्रकार महाकवियों की वाणी में भी वाच्यार्थ/मुख्यार्थ के अलावा भी कोई अन्य अर्थ प्रकट होता है। जहाँ यह अन्य अर्थ वाच्यार्थ/मुख्यार्थ से भी अधिक प्रभावपूर्ण या चमत्कारपूर्ण हो जाता है, तो उसे ही ध्वनि काव्य के नाम से भी जाना जाता है।"

नोट 1: आचार्य आनन्दवर्धन ने 'काव्यस्य आत्मा ध्वनि रिति' यह कथन लिखकर ध्वनि को काव्य की आत्मा के रूप में स्वीकार किया है।

नोट 2: आचार्य आनन्दवर्धन ने 'सूरिभिः' शब्द का अर्थ 'वैयाकरण' या 'व्याकरण के विद्वान' ग्रहण किया है।

5. **आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार:** आचार्य अभिनवगुप्त ही आचार्य आनन्दवर्धन के ध्वनि सिद्धांत के सर्वप्रथम प्रबल समर्थक विद्वान माने जाते हैं। इन्होंने 'ध्वन्यालोक' ग्रंथ की टीका 'ध्वन्यालोक लोचन' नाम से लिखी थी। इस रचना में ध्वनि की परिभाषा देते हुए आचार्य अभिनवगुप्त ने लिखा है: "जिस प्रकार एक घंटे पर प्रहार करने पर पहले एक टंकार उत्पन्न होती है एवं तत्पश्चात् धीरे-धीरे मधुर झंकार भी उत्पन्न होने लग जाती है, इसी प्रकार जब किसी पद में अथवा काव्य में पहले एक वाच्यार्थ (मुख्यार्थ) प्रकट होता है एवं तदुपरांत कोई अन्य व्यंग्यार्थ/ध्वन्यार्थ भी प्रकट होने लग जाता है, जो वाच्यार्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारपूर्ण होता है — तो उस प्रकार के काव्य को ही ध्वनि के नाम से पुकारा जाता है।"

- **आचार्य अभिनवगुप्त ने ध्वनि के अंतर्गत निम्नलिखित 5 वस्तुओं का समावेश किया है:**
  1. व्यंजक शब्द
  2. व्यंजना व्यापार
  3. व्यंजक अर्थ
  4. व्यंजना शब्द शक्ति
  5. व्यंग्य प्रधान काव्य (ध्वनि काव्य)

काव्य के भेद — 3

- आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा काव्य के प्रमुख तीन भेद माने गए हैं:
  1. ध्वनि काव्य
  2. गुणीभूत व्यंग्य काव्य
  3. साधारण / चित्र / अवर काव्य

1. ध्वनि काव्य

- जब किसी पद में वाच्यार्थ (मुख्यार्थ) की अपेक्षा व्यंग्यार्थ/ध्वन्यार्थ अधिक चमत्कारपूर्ण या प्रभावशाली हो जाता है, तो उसे **ध्वनि काव्य** कहा जाता है।
- आचार्य आनन्दवर्धन, मम्मट और विश्वनाथ ने इसे **उत्तम काव्य** कहा है।
- आचार्य पं. राज जगन्नाथ ने इसे **उत्तमोत्तम काव्य** की संज्ञा दी है।
- **उदाहरण**: "नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल। कलि ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल॥" (यहाँ 'अन्योक्ति अलंकार' है।)
- **व्याख्या**: पद में 'पुष्प, कलि, भ्रमर, पराग' आदि शब्दों का सामान्य वाच्यार्थ है, लेकिन यह व्यंग्यार्थ भी प्रकट हो रहा है कि राजा जयसिंह को अपने राज्य के कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। यहाँ व्यंग्यार्थ, वाच्यार्थ की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है, अतः यह **ध्वनि काव्य** है।
- **ध्वनि के उपभेद (आ. आनन्दवर्धन के अनुसार):**
  1. रस-ध्वनि काव्य (सर्वश्रेष्ठ)
  2. अलंकार-ध्वनि काव्य
  3. वस्तु-ध्वनि काव्य
- इनमें **रस-ध्वनि काव्य** को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

2. गुणीभूत व्यंग्य काव्य

- जब किसी पद में वाच्यार्थ के साथ-साथ व्यंग्यार्थ भी प्रकट होता है **और दोनों ही अर्थ समान रूप से प्रभावशाली या चमत्कारपूर्ण होते हैं**, तो उसे **गुणीभूत व्यंग्य काव्य** कहा जाता है।
- आनन्दवर्धन, मम्मट, विश्वनाथ ने इसे **मध्यम श्रेणी का काव्य** माना है।
- पं. राज जगन्नाथ ने इसे **उत्तम श्रेणी का काव्य** माना है।
- **उदाहरण: "अनदेखे देखन चहै, देखे विद्रुस भिन्न। देखे बिन देखहु पै, तुम सो सुख नहीं भिन्न॥"**
- **व्याख्या:** नायिका कहती है कि जब वह नायक को नहीं देखती तो देखने की इच्छा होती है, और जब देख लेती है तो पुनः बिछुड़ने का भय लगता है। यह वाच्यार्थ के साथ-साथ यह व्यंग्यार्थ भी है कि वह सदैव नायक का सामीप्य चाहती है। दोनों ही अर्थ प्रभावशाली हैं, इसलिए यह **गुणीभूत व्यंग्य काव्य** है।

3. साधारण / चित्र / अवर काव्य

- जब किसी पद में **केवल वाच्यार्थ ही चमत्कारपूर्ण होता है** और कोई व्यंग्यार्थ प्रकट ही नहीं होता, तो वह **साधारण, चित्र या अवर काव्य** कहलाता है।
- आनन्दवर्धन, मम्मट, विश्वनाथ ने इसे **अधम काव्य** कहा है।
- पं. राज जगन्नाथ ने इसे **मध्यम काव्य** कहा है।
- **उदाहरण:** "तों पर वारों उरबसी, सुनि राधिके सुजान। तु मोहन के उरबसी, हवै उरबसी समान॥"
- **व्याख्या:** बिहारी के इस पद में यमक अलंकार और अभिधा शब्द शक्ति के कारण वाच्यार्थ तो चमत्कारपूर्ण है, परन्तु कोई व्यंग्यार्थ नहीं है। अतः यह **चित्र / अवर काव्य** की श्रेणी में आता है।

तीनों काव्य भेदों का तुलनात्मक विवरण

काव्य का भेद	**लक्षण / पहचान**	**आनन्दवर्धन / मम्मट / विश्वनाथ**	**पं. राज जगन्नाथ**
1. ध्वनि काव्य	वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ की प्रधानता	उत्तम काव्य	उत्तमोत्तम काव्य
2. गुणीभूत व्यंग्य काव्य	वाच्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ दोनों ही चमत्कारपूर्ण	मध्यम काव्य	उत्तम काव्य
3. साधारण/चित्र/अवर काव्य	केवल वाच्यार्थ ही चमत्कारपूर्ण, व्यंग्यार्थ नहीं प्रकट	अधम काव्य	मध्यम काव्य

ध्वनि के भेद / वर्गीकरण

- आचार्य आनन्दवर्धन ने ध्वनि के निम्नलिखित भेद माने हैं:
- **मुख्यतः दो भेद (कुल चार प्रकार):**
  1. **अलंकार-ध्वनि**
  2. **वस्तु-ध्वनि**
- इनके अतिरिक्त ध्वनि दो और दृष्टियों से विभाजित होती है:
  1. **अभिधा-मूलक ध्वनि** (विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि)
  2. **लक्षणा-मूलक ध्वनि** (अविवक्षित वाच्य ध्वनि)

1. अभिधामूल ध्वनि

- **संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि (अनुरणन ध्वनि)** सर्वप्रथम वाच्यार्थ, उसके बाद व्यंग्यार्थ को साथ जोड़कर अर्थ ग्रहण।
- **असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि** रस सिद्धांत पर आधारित। शतपत्र भेद न्याय सिद्धांत पर आधारित।